रविवार 10 जनवरी, 2021

विषय — धर्मविधि

***स्वर्ण पाठ:* 2 इतिहास 34 : 27**

"कि इसलिये कि तू वे बातें सुन कर दीन हुआ, और परमेश्वर के साम्हने अपना सिर नवाया, कारण मैं ने तेरी सुनी है; यहोवा की यही वाणी है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **व्यवस्थाविवरण 8 : 1-4, 11, 17, 18**

1 जोजो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं उन सभों पर चलने की चौकसी करना, इसलिये कि तुम जीवित रहो
और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उस में जा कर उसके
अधिकारी हो जाओ।
2 और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले
आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि
तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं।
3 उसने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही
जानते थे, वही तुझ को खिलाया; इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं
जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है।
4 इन चालीस वर्षों में तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पांव फूले।
11 इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा,
नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका मानना छोड़ दे;
17 और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त
हुई।
18 परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पति प्राप्त करने का सामर्थ्य
इसलिये देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बान्धी थी उसको पूरा करे, जैसा आज
प्रगट है।

पाठ उपदेश

बाइबल

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. मीका 6 : 6-8

6 मैं क्या ले कर यहोवा के सम्मुख आऊं, और ऊपर रहने वाले परमेश्वर के साम्हने झुकूं? क्या मैं होमबलि
के लिये एक एक वर्ष के बछड़े ले कर उसके सम्मुख आऊं?
7 क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, वा तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त
में अपने पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूं?
8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि
तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

2. व्यवस्थाविवरण 5 : 1-4

1 मूसा ने सारे इस्राएलियों को बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियों, जो जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें
सुनाता हूं वे सुनो, इसलिये कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो।
2 हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बान्धी।
3 इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां आज के दिन जीवित हैं।
4 यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आम्हने साम्हने बातें की;

3. व्यवस्थाविवरण 6 : 1, 4-8, 18

1 यह वह आज्ञा, और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है,
कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को पार जाने पर हो;
4 हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;
5 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।
6 और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें;
7 और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते,
उठते, इनकी चर्चा किया करना।
8 और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें।
18 और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है वही किया करना, जिस से कि तेरा भला हो, और
जिस उत्तम देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उस में तू प्रवेश करके उसका अधिकारी
हो जाए,

4. व्यवस्थाविवरण 7 : 9

9 इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य ईश्वर है; और जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा पालता, और उन पर करूणा करता रहता है;

5. मरकुस 1 : 14 (यीशु)-22, 32-39

14 यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
15 और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो॥
16 गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उस ने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे।
17 और यीशु ने उन से कहा; मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।
18 वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19 और कुछ आगे बढ़कर, उस ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यहून्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा।
20 उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे चले गए॥
21 और वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा।
22 और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं, परन्तु अधिकारी की नाई उपदेश देता था।
32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए।
33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं॥
35 और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।
36 तब शमौन और उसके साथी उस की खोज में गए।
37 जब वह मिला, तो उस से कहा; कि सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं।
38 उस ने उन से कहा, आओ; हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।
39 सो वह सारे गलील में उन की सभाओं में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा॥

6. मरकुस 12: 28-34 (*से 1st.*)

28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया; उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है?
29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।
30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।
31 और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
32 शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरू, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं।
33 और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है।
34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं॥

7. इब्रानियों 8 : 8 (देखो), 10, 11

8 प्रभु कहता है, देखो वे दिन आते हैं, कि मैं इस्त्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा।
10 फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे।
11 और हर एक अपने देश वाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।

8. इब्रानियों 9 : 13 (*से 1st* ,), 13 (शुद्धता), 14

13 क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू ...जाने से शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है।
14 तो मसीह का लोहू जिस ने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 183 : 21-25

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

2. 3 : 14 (*से*)-16

... भगवान को समझना अनंत काल का काम है, और विचार, ऊर्जा और इच्छा के पूर्ण संरक्षण की मांग करता है।

3. 40 : 25-30

हमारे स्वर्गीय पिता, दिव्य प्रेम, मांग करते हैं कि सभी पुरुषों को हमारे गुरु और प्रेरितों के उदाहरण का पालन करना चाहिए न कि केवल उनके व्यक्तित्व की पूजा करनी चाहिए। यह दुखद है कि वाक्यांश ईश्वरीय सेवा आम तौर पर दैनिक कर्मों के बजाय सार्वजनिक पूजा का मतलब है।

4. 32 : 3-14

प्राचीन रोम में एक सैनिक को अपने जनरल के प्रति निष्ठा की शपथ लेने की आवश्यकता थी। इस शपथ के लिए लैटिन शब्द संस्कार था, और हमारे अंग्रेजी शब्द संस्कार से लिया गया है। यहूदियों में यह एक प्राचीन रीति-रिवाज था जिसमें प्रत्येक अतिथि को एक कप शराब दी जाती थी। लेकिन यूचरिस्ट एक रोमन सैनिक की शपथ को याद नहीं करता है, न ही शराब, आदी अवसरों पर और हमारे भगवान के कप यहूदी संस्कारों में इस्तेमाल किया गया था। कप उनके कड़वे अनुभव को दर्शाता है, - जिस कप से उन्होंने प्रार्थना की थी वह उनसे गुजर सकता है, हालांकि वह दिव्य डिक्री को पवित्र रूप से प्रस्तुत करते हैं।

5. 33 : 27-17

ईसाई, क्या आप उसका प्याला पी रहे हैं? क्या आपने नई वाचा के खून को साझा किया है, जो उत्पीड़न भगवान की एक नई और उच्च समझ में भाग लेते हैं? यदि नहीं, तो क्या आप यह कह सकते हैं कि आपने यीशु को उसके प्याले में स्मरण किया है? क्या वे सभी जो यीशु की याद में रोटी खाते हैं और शराब पीते हैं, अपना प्याला पीना

चाहते हैं, अपना क्रूस लेते हैं, और मसीह-सिद्धांत के लिए सब छोड़ देते हैं? फिर एक मृत संस्कार की प्रेरणा को दिखाने के बजाय, त्रुटि दिखाने और शरीर को "भगवान के लिए स्वीकार्य," बनाकर दिखाने के बजाय कि सत्य समझ में आ गया है? यदि मसीह, सत्य, प्रदर्शन में हमारे पास आए हैं, तो प्रदर्शन के लिए किसी अन्य स्मारक की आवश्यकता नहीं है, प्रदर्शन के लिए इमैनुअल, या भगवान हमारे साथ हैं; और यदि कोई मित्र हमारे साथ है, तो हमें उस मित्र के स्मारक की आवश्यकता क्यों है?

अगर कभी संस्कार का हिस्सा बनने वाले सभी लोगों ने यीशु की पीड़ाओं को याद किया और उनके प्याले को पीया, तो उन्होंने दुनिया में क्रांति ला दी। यदि सभी जो भौतिक प्रतीकों के माध्यम से अपने स्मरणोत्सव की तलाश करते हैं, तो क्रूस को उठाएंगे, बीमारों को चंगा करेंगे, बुराइयों को बाहर निकालेंगे, और गरीबों को मसीह, या सत्य का उपदेश देंगे, - ग्रहणशील विचार, - वे सहस्त्राब्दी में लाएंगे।

6. 25 : 26-32

शिक्षक के प्रति विश्वास और सभी भावनात्मक प्रेम हम उस पर पूरा कर सकते हैं, कभी भी हमें उसका अनुकरण करने वाला नहीं बनाएंगे। हमें इसी तरह से जाना चाहिए और करना चाहिए, अन्यथा हम उन महान आशीषों में सुधार नहीं कर रहे हैं जो हमारे मास्टर ने काम किया था और हमारे लिए सबसे अच्छा था। मसीह की दिव्यता को यीशु की मानवता में प्रकट किया गया था।

7. 54 : 10-13

वह उदारतापूर्वक अपने प्रिय-खरीदे हुए खजाने को खाली या पाप से भरे मानव भंडारों में डाल सकता है, जो यीशु के गहन मानव बलिदान की प्रेरणा थी।

8. 11 : 22-27

हम जानते हैं कि पवित्रता पाने के लिए पवित्रता की इच्छा आवश्यक है; लेकिन अगर हम सब से ऊपर पवित्रता की इच्छा रखते हैं, तो हम इसके लिए सब कुछ त्याग देंगे। हमें ऐसा करने के लिए तैयार होना चाहिए, ताकि हम पवित्रता के लिए एकमात्र व्यावहारिक मार्ग में सुरक्षित रूप से चल सकें।

9. 15 : 26-32

आत्म-विस्मृति, पवित्रता और स्नेह निरंतर प्रार्थना है। पेशा नहीं, अभ्यास विश्वास नहीं समझ, सर्वशक्तिमान के कान और नेक हाथ और वे निश्चय ही असीम आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। भरोसेमंदता प्रबुद्ध विश्वास की नींव है। पवित्रता के लिए फिटनेस के बिना, हम पवित्रता प्राप्त नहीं कर सकते।

10. 261 : 31-5

हमें अच्छे और मानव जाति को याद करने में अपने शरीर को भूल जाना चाहिए। हर घंटे आदमी की अच्छी मांग, जिसमें होने की समस्या को हल करना। भलाई के प्रति समर्पण मनुष्य की ईश्वर पर निर्भरता को कम नहीं करता, बल्कि उसे बढ़ाता है। न तो अभिषेक परमेश्वर के प्रति मनुष्य के दायित्वों को कम करता है, बल्कि उनसे मिलने की सर्वोपरि आवश्यकता को दर्शाता है।

11. 167 : 32-3

एक अच्छे जीवन के लिए अच्छे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए, सीधे-सादे चरित्र के लिए उचित लग रहा है, कमजोर और सांसारिक लोगों के लिए एक खराब बदलाव है, जो उनके लिए क्रायश्चियन साइंस के मानक को बहुत अधिक मानते हैं।

12. 462 : 9-19

यदि छात्र केवल भाग में सत्य की शिक्षाओं का अभ्यास करने के लिए चला जाता है, तो भगवान और मेमन के बीच अपने हितों को विभाजित करना और सत्य के लिए अपने स्वयं के विचारों को प्रतिस्थापित करना, वह अनिवार्य रूप से उस त्रुटि को पुनः प्राप्त करेगा जो वह बोता है। जो कोई भी क्रिश्चियन साइंस के उपचार का प्रदर्शन करेगा, उसे अपने नियमों का कड़ाई से पालन करना होगा, प्रत्येक कथन को ध्यान में रखना होगा, और नीचे दिए गए रूढ़ियों से आगे बढ़ना होगा। इस कार्य में कुछ भी मुश्किल या कठिन नहीं है, जब रास्ता बताया जाता है; लेकिन आत्म-वंचना, ईमानदारी, ईसाइयत और दृढ़ता अकेले पुरस्कार जीतते हैं, जैसा कि वे आमतौर पर जीवन के हर विभाग में करते हैं।

13. 458 : 25 (यह)-11

साइंटिस्ट बुद्धिमानी से अपने पाठ्यक्रम को आकार देते हैं, और ईश्वरीय मन की अग्रणी का अनुसरण करने में ईमानदार और सुसंगत हैं। उसे जीवित रहने के साथ-साथ उपचार और शिक्षा के माध्यम से साबित करना होगा कि मसीह का मार्ग एकमात्र ऐसा है जिसके द्वारा नश्वर लोगों को पाप और बीमारी से बचाया जाता है।

जैसा कि फूल अंधकार से प्रकाश की ओर जाता है, ईसाई धर्म पुरुषों को आत्मा से पदार्थ की ओर मुड़ने का कारण बनता है। मनुष्य फिर उन चीजों को नियुक्त करता है जो "आँख ने देखा नहीं और न ही कानों ने सुना।" पॉल और जॉन को स्पष्ट आशंका थी कि नश्वर मनुष्य बलिदान के बिना सांसारिक सम्मान प्राप्त नहीं करता है, उसी तरह उसे सारी दुनिया को त्यागकर स्वर्गीय धन प्राप्त करना चाहिए। तब उसके पास दुनियादारी के उद्देश्य, उद्देश्य और साधन के साथ कुछ भी सामान्य नहीं होगा।. पहले से ही उठाए गए कदमों से क्राइश्चियन साइंस की भविष्य में उन्नति नहीं हुई है, कहीं ऐसा न हो कि आप खुद ही पहला कदम उठाने में असफल हो जाएं।

14. 254 : 10-15

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है। अपूर्ण नश्वर धीरे-धीरे आध्यात्मिक पूर्णता के चरम को समझ लेते हैं; लेकिन दुर्दशा शुरू करने और होने की बड़ी समस्या को प्रदर्शित करने के संघर्ष को जारी रखने के लिए, बहुत कुछ कर रहा है।

15. 21 : 9-14

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6